# एक निरन्तर सर्वशिवं

यह सृष्टि परिवर्तनशील है। ऐसा कोई टाइम नहीं जिसके अंदर परिवर्तन न हो। हर सेकिंड के अंदर परिवर्तन हो रहा है। जैसे ये रात दिन हो रहा। बदली ही बदली है। बदली के अलावा और कुछ भी सिद्ध नहीं होता। तमाम सृष्टि का अनुसंधान करके देख लो। जिस पदार्थ का भी अनुसंधान करेगा, पता चलेगा सब परिवर्तनशील है। आजकल के कुछ लोग कहता है कि वहां परिवर्तन नहीं है। मगर परिवर्तन वहां भी है। जैसे हमारा वेटलैसनेस इसमें भी परिवर्तन है। दिखता नहीं। मगर परिवर्तन वहां भी जारी है। इस दृष्टि से देखा जावे तो इस संसार में जहां कहीं भी हमारा नजर जाती है, सब जगह के अंदर परिवर्तन ही परिवर्तन है। गति ही गति है।

गति के अलावा कुछ भी सिद्ध नहीं होता। वो गति किसी के अधीन नहीं। वो स्वतंत्र-रूप से चल रही है। हम हमारे शरीर को गतिशील नहीं मानते मगर यह भी गतिशील है। यह एक सेकिंड ठहरता नहीं। इस प्रकार इस शरीर में जितने भी पदार्थ है, काम कहो, क्रोध कहो, लोभ कहो, मद कहो और सब जितने भी पदार्थ देखने में आते हैं सब गतिशील है।

जिसे बुरा कर्म कहते हो वह भी गतिशील है, जिसे अच्छा कर्म कहते हो वह गतिशील है। यह ठहरता नहीं है। जिसे शास्त्रकारों ने, वेद जानने वालों ने पदार्थ कहा, वह सब गतिशील है। गति के अलावा कुछ भी सिद्ध नहीं होता। गति होने से ही सब कुछ बदलता है, नष्ट होता है। इस दृष्टि से देखा जावे तो सृष्टि सारा ही गतिशील है। यह सारा ही एक फोर्स है, एक गति है। एक सेकिंड भी यह नहीं रुकता है। कोई रोक भी नहीं सकता है।

जब एक पदार्थ अखण्ड-रूप से गतिशील है तो मानना पडेगा कि सृष्टि के अंदर कोई भी पदार्थ स्थिर नहीं है। केवल गति ही गति है। गति के अलावा कुछ भी नहीं है। उस गति के अंदर तुम्हारा गति, हमारा गति हम बना लेता है। हम इसे किसके जरिए से रोकेगें ? हम बोल रहा है तो यह भी गति के जरिए से बोल रहा है। देख रहा है तो गति के जरिए से देख रहा है। यदि हम घूमता है, फिरता है, यह सब एक गति के जरिए से हो रहा है। फोर्स के अलावा कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता है। जब सब कुछ फोर्स है तो यहां किसी ने किया क्या? कुछ भी नहीं किया। गति होने से ही सब कुछ बदलता है, नष्ट होता है

इस दृष्टि से देखा जावे तो सृष्टि सारी ही गतिशील है। यह सारा ही एक फोर्स है, एक गति है। एक सेकिंड भी यह नहीं रूकता है। कोई रोक नहीं सकता है। जब एक पदार्थ अखण्ड-रूप से गतिशील है तो मानना पड़ेगा कि सृष्टि के अंदर कोई भी पदार्थ स्थिर नहीं है। केवल गति के अलावा कुछ भी नहीं है।

उस गति के अंदर तुम्हारा गति, हमारा गति हम बना लेते हैं। हम इसे किसके जरिए से रोकेगें ? हम बोल रहा है तो यह भी गति के जरिए से बोल रहा है। देख रहा है तो गति के जरिए से देख रहा है। यदि हम घूमता है, फिरता है, यह सब एक गति के जरिए से हो रहा है। फोर्स के अलावा कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता है। जब सब कुछ फोर्स है तो यहां किसी ने किया क्या, कुछ भी नहीं किया।

न किसी ने भक्ति किया, न चिंतन किया, न भजन किया, न तप किया, न योग किया, न समाधि किया। क्यों, क्योंकि सब के अंदर एक ही फोर्स काम कर रहा है। ऐसी कोई जगह नहीं मिलता जिस के अंदर फोर्स न हो।

सब जगह फोर्स ही फोर्स है तो किसने क्या किया? यह मिथ्या अभिमान है कि हमने किया, हमने समाधि लगाया, भजन किया, यह किया, वो किया। गहराई से देखें तो किसी ने कुछ नहीं किया। जब एक ही फोर्स अखण्ड-रूप से चल रही है तो यह सब कुछ उसी के अंदर आ गया। वास्तव में तुमने कुछ नहीं किया। आपे ही हो रहा है सृष्टि के अंदर जितनी भी क्रिया है।

कोई कहता है हम भजन के जरिए से अंत:करण को शुद्ध करेंगे। कोई कहता है हम तप के जरिए से अंत:करण को शुद्ध करेंगे। कोई कहता है हम ज्ञान के जरिए से अंत:करण को शुद्ध करेंगे। ये सब फोर्स के जरिए से हो रहा है। कौन सी ऐसी चीज है जो फोर्स के जरिए से नहीं हो रही? कौन सा ऐसा सेकिंड है, टाईम है जब यह फोर्स नहीं काम कर रहा हो? तो फिर हमने कौनसा काम किया? भजन किया, भजन नहीं किया। भजन कब किया ? भजन करना भी एक क्रिया है। भजन न करना भी एक क्रिया है। यह दोनो क्रिया कब नहीं किया? हर सेकिंड पर यह दोनों हो रहा है। करना भी हो रहा है और न करना भी हो रहा है। करने में भी क्रिया है और न करने में भी क्रिया है। वास्तव में दोनों में वही फोर्स काम कर रहा है।

इस दृष्टि से देखा जावे तो मनुष्य इतना काम ही कर सकता है कि इस फोर्स को खुला छुट्टी दे दे। जैसे यह चलता है इसे चलता रहने दो। फिर तुहानू कोई बंधन नहीं है। बिल्कुल स्वतंत्र हो। गीताकार ने इस पर बहुत जोर दिया। अर्जुन को कहा तुम बेकार अभिमान कर रहे हो। वास्तव में तुम कुछ नहीं कर रहे? यदि कर रहा है तो यह आत्म-फोर्स ही कर रहा। तुम्हारे अन्दर नहीं, तमाम सृष्टि के अंदर समान-रूप से वो गतिशील है। किसी ने कुछ भी नहीं किया। ये आपे ही चल रहा है।

ये दृष्टि तुम भी कर लो तो तुम्हें बंधन नहीं होगा। बिल्कुल स्वतंत्र हो। एक ही चीज है खुला छुट्टी दे दो। जिसे शास्त्रों ने सिद्धि कहा, योगी लोगों ने बिल्कुल खुला छोड़ दिया, अक्कड बिल्कुल छोड़ दी, ढ़ीला छोड़ दिया। तुम भी ढ़ीला छोड दो। अपने आप होने दो। ढ़ीला छोड़ देने के बाद देख लेना कैसी हालत होगी।

ढ़ीला छोड़ देने के बाद भी वह आपे ही गतिशील है। तुम्हारे मन के अंदर संकल्प उठते हो, तुम्हारे बुद्धि के अंदर विचार उठते हो, अंहकार उठते हो। यह सब आपे ही हो रहा है। तुसीं नहीं कर रहे हो। तुसी क्या कर रहे हो इस के अंदर? यह तो फोर्स है। संकल्प-विकल्प करते हो वह भी फोर्स है। करना न करना कोई फर्क नहीं पड़ता। विचार करो तो भी फोर्स है, न करो तो भी फोर्स है। अंहकार करो तो भी फोर्स है, न करो तो भी फोर्स है। वास्तव में इस रहस्य को समझना होगा।

इस रहस्य को समझ लें तो इस सृष्टि के अंदर करने योग्य कुछ भी नहीं रहता। किसी के भी कुछ करने योग्य नहीं रहता। आपे ही हो रहा है यह सब। इस सृष्टि में सुबह होता है, शाम होता है, जन्म लेते हो, मृत्यु होता है, बुड्ढ़ा होता हो, जवान होते हो, मर जाते हो, फिर जन्म लेते हो, यह सब तुम्हारे जरिए से, हमारे जरिए से थोड़े हो रहा है? कौन जन्मने के बाद मरना चाहता है? मरने के बाद कौन जन्म लेना चाहता है? मगर मजबूरी है। यह मजबूरी ही फोर्स है। फोर्स के अंदर फंसे हुए यह सब आपे ही हो रहा है। यह सब क्रिया आपे ही हो रही है।

मनुष्य इस रहस्य को समझ लें कि सृष्टि के अंदर जितनी भी क्रिया है इसके अंदर किसी का कोई दखल नहीं, यह आटोमेटिक है। हमारे शरीर के अंदर चलने वाली क्रिया भी आटोमेटिक चलती रहेगी। तुम कानों से सुनते हो, आंखों से देखते हो, इन्द्रियों से काम लेते हो, पैर से चलते हो, हाथ से लेने देने का कार्य करते हो। मन से संकल्प विकल्प करते

हो। इन तमाम जगह के अंदर गहराई से देखो तो एक ही फोर्स काम कर रही है और कुछ नहीं है। इसी प्रकार हमारे शरीर के अणु अणु के भीतर अनुसंधान करके देखो, सब जगह एक ही फोर्स है। उसमें सब जगह चैतन्य भरा हुआ है। ऐसी कोई जगह नहीं होगी जिसमें चैतन्य नहीं छुपा हुआ हो। ऐसा कोई हिस्सा तुम सिद्ध नहीं कर सकते हो जिस के अंदर यह चैतन्य न हो। हर जगह यह समान-रूप से चैतन्य से भरा हुआ है।

इस दृष्टि के मद्दे नज़र शास्त्रकारों ने कहा कि सृष्टि ईश्वर-रूप है। यह सृष्टि बिल्कुल सत्य है। मगर जैसा तुम देखते हो वैसा यह सत्य-रूप नहीं है। देखने की दृष्टि के अंदर फर्क करना पड़ेगा। फोर्स की शक्ल में देखो, चैतन्य की शक्ल में देखो। यह सृष्टि सारा चैतन्य है, इसके अलावा कुछ भी नहीं। इसमें कल्पना करके तुम देखोगे तो यह भिन्न भिन्न नजर आएगा।

कोई रोता है, कोई पीटता है, कोई अमीर है, कोई छोटा है, कोई मोटा है, कोई पतला है, भिन्न भिन्न शक्ल में। यह दृष्टि और होता है। ये दोनों दृष्टि मनुष्य में हमेशा रहता है। एक दृष्टि जाग्रत रहने पर दूसरा सोया रहता है। जिस टाइम पर यह दृष्टि जागृत रहता है, वह अज्ञान-दृष्टि रहता है। जब यह अज्ञान-दृष्टि जागृत रहता है तो यह सब सृष्टि-रूप में भासते हैं। हम हैं, तुम हो, ऊपर है, नीचे है, अगल है, बगल है, छोटा है, मोटा है, लम्बा है, विद्वान है, पंडित है और भी कई किस्म की उपाधियां हम खड़ी कर देते हैं। ये सारे के सारे अज्ञान-दृष्टि के अंदर हैं।

इससे दूसरा जो दृष्टि है वह ज्ञान-दृष्टि होता है। उस ज्ञान के अंदर एक ही चैतन्य है। चाहे ज्ञान हो, चाहे विज्ञान, उसमें यही चैतन्य समान-रूप से गतिशील होगा, कोई फरक नहीं होगा। कोई विद्वान हो, अविद्वान हो, भक्त हो, अभक्त हो, चोर, डाकू सब में समान-रूप से एक ही फोर्स काम करती है। उस में फर्क कोई भी न होगा।

जितना फर्क है, वह सारे कल्पना के अंदर है। कल्पना ही हमारी अज्ञानावस्था है। जितना हम कल्पना को बढ़ाएगें, हमारा अज्ञान बढ़ता जाएगा। वास्तव में तात्विक दृष्टि से देखा जावे तो हर पदार्थ अपनी जगह समान है। ऐसा कोई पदार्थ नहीं जिसके अंदर गतिशीलता न हो। जिसके अंदर चैतन्य न हो। हर पदार्थ के अंदर समान-रूप से चैतन्य है। जब यह दृष्टि आ जाती है तो मनुष्य शांत हो जाता है। उसमें कोई विकार नहीं आएगा। दृष्टि के अंदर ये भिन्न भिन्न पदार्थ हमारे सामने आएगा किन्तु सत्य को जानने की वजह से

वह यह जानता है कि ये सब कुछ कल्पना ही है। इसके अंदर जो छुपी हुई फोर्स से एक समान-रूप से वह सबके अंदर छुपा हुआ है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। वह हमेशा एक जैसा रहता है।

यह दृष्टि जब आ जाता है तब बाहरला होने वाला जितना भी परिवर्तन है उसके अंदर कोई असर नहीं कर सकता है किसी भी सूरत में। जैसे हमारे से बाहर ये उपद्रव वगैरह हो रहा है ? यह हमारे शरीर के साथ कुछ भी नहीं कर सकता है। जैसे कोई हमारे शरीर के साथ कोई कुछ भी करे, मारे पीटे तो हमें दुख होता है, किन्तु दूर कोई उपद्रव हो, मारपीट करे तो हमें कुछ असर नहीं होता है।

जब मनुष्य अपने आत्मतत्व का इतना अनुसंधान कर लेता है तो वह अपने आत्मतत्व में स्थिर हो जाता है। इन सब बातों को अपने ऊपर और दूर अनुभव करता है। उसके ऊपर कुछ भी नहीं हो रहा होता है। वो जो कुछ भी हो रहा है, उसके अंदर भी अनुसंधान करके देख लेता है कि उसके अंदर भी चैतन्य ही काम कर रहा होता है। वह ऐसा अनुभव करता रहता है।

जिसको तुम अज्ञान कहते हो, मूर्खता कहते हो, आखिर उसके अंदर भी तो वह चैतन्य ही छुपा हुआ होता है। चैतन्य न हो तो तुम देख किस तरह सकते हो? सुन किस तरह सकते हो? काम किस तरह कर सकते हो? बिना चैतन्य के कोई कुछ कर ही नहीं सकता है इस सृष्टि के अंदर। चैतन्य ही तो फोर्स है। वह ईश्वर ही चैतन्य है। चैतन्य के अतिरिक्त और कोई भी वस्तु हो नहीं सकती। कोई जगह नहीं हो सकती जहां चैतन्य न हो। यह एक विचित्र बात है। ऐसा तुम कोई जगह सिद्ध नहीं कर सकते जहां चैतन्य न हो। यह एक विचित्र बात है। हर जगह के अंदर समान-रूप से चैतन्य खडा हुआ है।

चैतन्य से भिन्न कुछ भी नहीं है। चैतन्य से भिन्न अगर कुछ भी प्रतीत होता है तो इसी को अज्ञान कहा। अविद्या कहा। माया कहा। भिन्न भिन्न नामों से कहा। वास्तव में इसका कोई अस्तितत्व नहीं। इस का अनुसंधान करो तो कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा। इस सृष्टि का गहराई से अनुसंधान करके देखो तो सब जगह फोर्स ही फोर्स सिद्ध होगा। इसके अलावा ये जितने भी नाम और रूप हैं, ये कुछ भी सिद्ध नहीं होयेगा। किसी भी सूरत में।

जैसे हमने तुम्हारे शरीर के मुतल्लिक कुछ भी कह दिया। कोई नाम दे दिया यह तो कल्पना किया। तुम्हारा नाम पुकारने के लिए एक कल्पना किया। इसका नाम फलाना

है। वास्तव में आपका कोई नाम नहीं। यह कल्पना किया हुआ नाम होता है। हम वो ही मान बैठते हैं। वास्तव में ये नाम और रूप जो प्रतीत होता है ये हमने कल्पना किया होता है। वास्तव में इसका कोई अस्तित्व नहीं।

कल्पना वो चीज है जो नहीं होते हुए भी भासता है। इसी को कल्पना कहा। ना होते हुए भी हमने कल्पना करके बना लिया। इसी कल्पना को हम सच्ची समझ बैठा। ये सृष्टि सारी की सारी जो प्रतीत होती है, कल्पना है। इसमें से यह सवाल पैदा होता है कि यह समस्त सृष्टि हमारी कल्पना है या किसी और की कल्पना है?

वास्तव में हमारी सृष्टि हमारी ही कल्पना है। दूसरे की सृष्टि के मुतल्लिक हमें नहीं पता। यह शरीर बना तो इसमें कल्पना मौजूद था। हमारी कल्पना के जरिए से ही यह शरीर बना। यदि कल्पना ना होती तो यह शरीर नहीं बन सकता था। इस शरीर के रहते हम जो कुछ भी बनाएगा वो हमारी ही कल्पना माना जाएगा। जैसे अग्नि, जल, वायु, आकाश हमने कल्पना करके बना लिया। यदि कल्पना करके नहीं बना तो हम इसके अंदर नहीं रह सकते या होना भी नहीं चाहिए।

यदि हमारे कल्पना किए बिना ही यह बन गया तो फिर हमारा इसके अंदर अस्तित्व होने का कहां गुंजाइश है? जैसे पौराणिकों ने कहा कि ब्रह्मा जी ने इसको बना दिया तो हम कहां से निकल आए इसके अंदर से? यदि ब्रह्मा की कल्पना ही थोड़ी देर के लिए मान लिया जाए तो हम कहां से निकल आया? हम यदि मौजूद हैं तो लाजिमी है कि हमारी कल्पना इसमें मौजूद है। क्योंकि, हमारी कल्पना नजर आती है। ब्रह्मा जी की कल्पना हमें प्रत्यक्ष नजर नहीं आती है। इससे सिद्ध होता है कि जो कुछ भी सृष्टि हम देख रहे हैं इसका कर्ता हम ही हैं। और कोई इसका कर्ता नहीं हो सकता।

जल, अग्नि, वायु, आकाश से यदि यह बना तो जल, अग्नि, वायु, आकाश ही इसका कर्ता है। तमोगुणी होने से हम अपने को महदूद मान बैठते हैं। महदूद अवस्था के अंदर जो कल्पना होगी वह महदूद मानी जावेगी। बिंदु अगर मौजूद है तो महान भी कहीं न कहीं छुपा होगा। यदि महान का अभाव है तो बिंदु कहां से पैदा हो गया? किन्तु बिंदु का अभाव हो तो महान भी नहीं हो सकता है।

बूंद के बाहर कोई समुद्र नहीं होयेगा। यदि तमाम बूंद को समुद्र के बाहर निकाल दिया जावे तो समुद्र का अस्तित्व कहीं भी सिद्ध नहीं होयगा। समुद्र का अस्तित्व कब

सिद्ध होता हैं? जब बूंद उसके अंदर मौजूद हो। वो बूंद ही समुद्र का शक्ल धारण किया हुआ है। बूंद नहीं तो समुद्र कभी भी सिद्ध नहीं होयेगा। इनका आपस में बड़ा भारी संबंध होता है। कुछ लोगों ने कहा कि बूंद और समुद्र अलग है। मगर सवाल यह है कि समुद्र के अंदर से तमाम बूँद निकाल दिया जावे तो समुद्र का अस्तित्व सिद्ध होगा? कभी भी सिद्ध नहीं होयेगा। बूंद के भाव के अंदर ही समुद्र का अस्तित्व सिद्ध होगा।

इसी प्रकार यह चैतन्य तमाम सृष्टि में फैला हुआ है। यह एक पानी की बूंद भी है किन्तु यह समुद्र भी है। इस प्रकार हमारी व्यक्ति कल्पना जो है उसमें यदि समिष्ट का अभाव मान लिया जावे तो समिष्ट का भाव इसमें कहां से पैदा हो गया? यदि समिष्ट इसमें छुपा हुआ है तो मानना होगा कि शरीर के अंदर भी वही तत्व है जो समष्टि के अंदर है। ब्रह्मा जी की कल्पना में जैसे पृथ्वी, जल, आकाश है, मान लिया तो हमारे शरीर के अंदर भी इन्हीं तत्वों को मानना होगा।

हमारे शरीर के अंदर यह कल्पना कहां से पैदा हो गई? जरूरी है कि हम इस शरीर के अंदर मौजूद हैं। जब हम मौजूद हैं तो मानना होगा कि हमारी ही कल्पना इसमें मौजूद हैं। वह शरीर की कल्पना हमने कहां से किया? यह कल्पना पंच तत्वों से ही किया न? किन्तु पंचतत्वों की कल्पना किसने किया? उस चैतन्य तत्व ने। यह रहस्य नहीं खुलता, मगर कुछ रहस्य है! और कोई कर्ता इसका नहीं है।

कर्ता इसका कोई यदि हैं तो वह चैतन्य तत्व ही हैं। हम ही है। लेकिन हम अपने स्वरूप को समझते नहीं। शरीर हम है नहीं, मन बुद्धि हम है नहीं। अपने आपको इस शरीर को मालिक समझते हैं। मन बुद्धि को हम मालिक समझते हैं। यह मन बुद्धि हमारे अधीन है। हम मन, बुद्धि, शरीर नहीं हैं। ये सब हमारे अधीन हैं। 'हम' इनके मालिक हैं।

'हम' सब पदार्थों के मालिक हैं। तो लाजिमी है कि हम इस समस्त सृष्टि के भी मालिक है। यह निश्चित बात है। वो 'हम' भी इस सृष्टि के अंदर चैतन्य की शक्ल में छुपा हुआ है। इस 'हम' का अभाव हो तो क्या यह शरीर हिल सकता है? डुल सकता है? कुछ कर सकता है? मन जो कुछ संकल्प-विकल्प करता है, जितनी भी शरीर में क्रिया होती है वह 'हम' के भाव से ही संभव है। इसका अभाव होने पर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। हमारे जरिए से यह सब होता है।

वही 'हम' सृष्टि के रूप में खड़ा हुआ है। किन्तु हम पहचानते नहीं। हम ऊपर ही ऊपर देखते है। शरीर को देखते हैं। शरीर के भीतर हो रही क्रिया को हम नहीं देख सकता है। हम हाथ को हिलता हुआ देखते हैं। किन्तु जिसके जरिए से हाथ हिलता है। उस शक्ति को नहीं देख सकते हो, इस प्रकार कोई भी क्रिया जैसे, अंहकार करते हो, यह सब गति है।

सुख दुख सब गतिशीलता की दृष्टि से बराबर है। गति हो रही है। इस क्रिया के भीतर जो चैतन्य है यदि उस पर हमारी दृष्टि पड़ जाए तो सुख दुख कुछ भी नहीं होगा। इसी तरह से ज्ञान-अज्ञान की स्थिति है। ये भी गतिशील है। यदि अज्ञान स्थिर हो तो यह कभी मिट नहीं सकता। यदि अज्ञान मिट सकता है तो वह गतिशील होगा।

हम इस बीच में इसको पकड़ लेते हैं। कहते हैं हम अज्ञानी हैं। जरूर हैं। हम का भाव करके इस गति को हमने पकड़ लिया। तब यह जाता नहीं है। इसे शिथिल कर दो, बिल्कुल ढ़ीला छोड़ दो तो सृष्टि का सारा काम चलता रहेगा, जैसे कि हमारे शरीर में हमारा प्राण है इस से शरीर का सारा काम चलता है।

यदि हम अकड़ जाये तो प्राण रुक जाएगा। ढीला छोड़ दो तो आपे ही चलता रहेगा। किसी को पता भी नहीं चलता है कि प्राण चलता है या नहीं। यदि प्राण में रुकावट पड़ जावे तो उसका पता चल जाता है। और देखने वाले को तकलीफ होती है। यदि शिथिल कर दिया तो आसानी से चलता रहेगा। उसमें कोई बंधन नहीं होयेगा।

इसी प्रकार इस सृष्टि की क्रिया को समझ लो। समझ कर बिल्कुल ढीला छोड़ दो। हम का, तुम का अभिमान बिल्कुल छोड़ दो। शिथिलीकरण होने से यह क्रिया आसानी से चलता है। सृष्टि का जितना भी क्रिया है आसानी से चलती रहेगी। उसमें कोई बंधन नहीं होगा।

बंधन तभी होयेगा जब उसके अंदर बोझ होयेगा। बोझ तभी होयेगा जब हम अंहकार करेंगे। अंहकार करेंगे तो बोझ होयेगा। अन्यथा कोई बोझ नहीं। प्राण पर अभिमान करने से बोझ बढ़ जाता है। इसी प्रकार इस सृष्टि की क्रिया के अंदर या प्राण की गति के अंदर जब हम अभिमान करते है तो प्राण भारी हो जाता है और चलने में कठिनाई होती है। वही दुख का कारण बन जाता है आगे चल कर।

तो हमारे कहने का मतलब है कि कुछ भी मत करो। बिल्कुल कुछ भी करने की जरूरत नहीं। कुछ किया भी नहीं किसी ने। न कर सकता है। मैं पहले सिद्ध कर चुका हूं कि एक क्रिया-शक्ति सब जगह समान-रूप से चल रही है सब जगह। वह कभी भी एक सेकिंड के लिए भी रुक नहीं सकती, ना ही कोई रोक सकता है। उसके अंदर न राजा है, न रंक है, न चक्रवर्ती है न बादशाह। वह समान-रूप से चल रही है। अनायास चल रही है। उसे खुला छुट्टी दे दो, जैसे चल रही है वैसे चलने दो।

तुसीं बिल्कुल स्वतन्त्र हो जायेगा। कुछ भी बंधन नहीं होगा। सृष्टि के अंदर कुछ भी होता रहे। सृष्टि ऊपर जाये, नीचे जाये, तुम्हारे अंदर कोई भी असर नहीं होयेगा। आफत तभी आती है जब तुम इसके अंदर अभिमान कर बैठते हो।

हम ढ़ीला इसे छोड़ता नहीं है, शिथलीकरण करता नहीं। तब जा कर तुम बंधन में आ जाते हो। वह रूकता नहीं है। वह है भी खुल्ला। वह गतिशील भी है। जिस पदार्थ को तुम रोकने की कोशिश कर रहे हैं क्या रोक सकते हो? वह जा रहा है, वह एक सेकिंड रुकेगा नहीं। कोई उसे रोक नहीं सकता। जब जाना है तो खुला छुट्टी दे दो तो स्वतंत्र हो जायेगा।

यदि तुम रोकोगे तो भारी हो जायेगा। भारी होगा तो तुम्हें बंधन होगा। आखिर सृष्टि के अंदर कुछ है तो इंसान उसका कर्ता बन जाता है। कर्ता बनने पर हम उस पदार्थ को रोकने की कोशिश करते हैं। रोकने में हम कामयाबी नहीं पाते। इससे दुख हो जाता है, बंधन हो जाता है। यह कर्तापन छोड़ दो। क्योंकि तुसीं कोई कर्ता नहीं हो। हर पदार्थ आपे ही चलता है।

तुम कर्ता नहीं हो। तुसीं जबरदस्ती कर्ता बन जाते हो। बिल्कुल शिथिलीकरण कर दो। शिथलीकरण के बाद अखण्ड-शक्ति है। अखण्ड-स्थिति है। अखण्ड-शान्ति है। अखण्ड-आनंद है। सब जगह आनंद ठसाठस भरा हुआ है। जैसे समुद्र के अंदर तरंगें उठती हैं। इस तरह तमाम सृष्टि के अंदर आनंद की तरंगें निकल रही हैं। आनंद के अलावा कुछ भी नहीं। मगर जरूरी है कि हम आनंद को पहचान लें। इस गतिशीलता को पहचान लें। तरंग को पहचान लें। उसमें रूकावट न बनें।

रूकावट बनेगें तो बंधन हो जावेगा। रूकावट को छोड़ दो जैसे जा रहा है जाने दो। बिलकुल स्वतंत्र हो जाओगे। यही कल्याण का रास्ता है। हम सहज-रूप से स्वतंत्रा प्राप्त

कर सकते हैं। बाकी सब तर्क है। हठ है। चाहे हजार साल तक तुम योग करो, यहीं पहुंचना पड़ेगा। तभी जाकर उसका योग पूर्ण होयेगा। चाहे भक्ति करो, कुछ भी करो, आखिर इस स्थान पर पहुंचना पड़ेगा। जब तक इस स्थान पर नहीं पहुंचते बिल्कुल स्वतन्त्र नहीं होयेगें। जब स्वतंत्र नहीं, तो बंधन है। बंधन ही दुख है।

बंधन किस को मानते हो? जब अंदर अभिमान करते हो। हमने रोक लिया, ऐसा समझ बैठते हो। बिल्कुल गलत बात है। यह शरीर, हम समझते हैं हमने इसको रोका हुआ है। कोई शरीर को रोक सकता है? एक सेकिंड भी यह रुकेगा नहीं। हर सेकिंड यह चल रहा है, ठहरेगा नहीं। जब हमने जन्म लिया तब भी चल रहा था। जन्म लेने के बाद भी चल रहा है। मरने के बाद भी चलता रहेगा। यह कभी भी बंद नहीं होयेगा किसी भी सूरत में। हमने कुछ किया भी नहीं, यह गतिशील है तो तुम बीच में क्यों टांग फंसाते हो? अभिमान क्यों करते हो? टांग फंसाना ही बंधन का कारण है।

तुसीं टांग फसाना छोड़ दो। तुम बिल्कुल स्वतंत्र हो। यह जो सिद्धांत है यह स्वामी दतात्रेय का सिद्धांत है। उसने भक्ति इत्यादि का खण्डन किया। "सर्व निरन्तर एक शिवं"। सब जगह के अंदर एक-मात्र 'सर्व निरन्तर शिव' छुपा हुआ है। तब किसका भजन किसके जरिए से करना? किसके जरिए से किसका ज्ञान करूंगा? किसके जरिए से किसका स्मरण करूंगा? यह सब गलत बात है।

एक अखण्ड-चैतन्य सब जगह है। सब जगह निरन्तर वह शिव भरा हुआ है - सार्वभौम। उसके अलावा कुछ भी नहीं। इसमें कुछ भी कर्म करने की जरूरत नहीं। यह सृष्टि सारी ही बिल्कुल स्वतंत्र है। हम भी स्वतंत्र हैं, किन्तु है समझने वाले के लिए। जो समझ नहीं सकता वह बंधन में है। वह फंसा हुआ है।

हमारे कहने का मतलब है कि अपने आप में अनुसंधान करके देखो। हम क्या करता है? हमारी स्थिति क्या है? हमारे हालात क्या हैं? हम क्या कर रहे हैं? कहां कर रहे हैं? किसके जरिए से कर रहे हैं? हम खुद कर रहे हैं या क्रिया अपने आप हो रही है? इसके मतलक हमने आज तक सोचा नहीं! यही तो हमारी बड़ा भारी भूल है!

यदि हम इस विषय को सोचेंगे तो प्रत्यक्ष नज़र आएगा कि यह सृष्टि सारी की सारी आपे ही चल रही है। तुसीं भी आपे ही चल रहे हैं। इसके अंदर कर्ता नहीं। कुछ भी नहीं। बिल्कुल मुक्तावस्था है। कोई भी बंधन के अंदर नहीं आया। सारे के सारे मुक्त हैं,

बंधन किसी के अंदर है ही नहीं। जब सर्व-निरन्तर एक शिव है तो उसके अंदर बंधन और मुक्ति कहां है? ये कुछ भी नहीं है।

ये सारा तुम्हारी कल्पना है। इस कल्पना में तुम अभिमान कर बैठते हो कि हमने किया, हमने कराया। यही बंधन है और कोई बंधन नहीं। बिल्कुल स्वतंत्रत-अवस्था है। इस स्वतंत्रत-अवस्था को तुम प्राप्त कर लो - चलते, फिरते उठते, अभिमान-रहित हो जाओ। चलता रहेगा, उठता रहेगा, बैठता रहेगा, लेकिन तुम कुछ भी नहीं कर रहा होगा।

हमने सुना - माया खड़ा हो जाएगा। रागद्वेष खड़ा हो जाएगा। वैर-विरोध खड़ा हो जाएगा। जितने भी ये उपद्रव है सारे का सारा खड़ा हो जाएगा। वास्तव में, क्रिया के शक्ल में देखोगे तो वो ही देखने वाला है, वो ही सुनने वाला है, वही देखने वाला है। उसमें कोई फरक नहीं होयेगा। आपे ही हो रहा है।

इस टाइम भी सब कुछ आपे ही हो रहा है। समझ का ही फरक है। इस टाइम पर तुम कह रहा है कि हमने देखा, हमने सुना। हम लगा देते हो इस क्रिया के अंदर। बाकी देखना जेडा, तुम हम लगाओ या नहीं लगाओ तो भी देखने की क्रिया बदस्तूर जारी रहेगा। वह कभी रुकेंगे ? कहीं रूकेंगे नहीं। इसी तरह सुनने का क्रिया जेडा है बदस्तूर जारी रहेगा। तुम हम लगा दो तो वह भारी हो जाएगा। खींचातानी होगा। वो ही स्पर्श करने वाला है। वो ही सब कुछ है। वो ही एक चैतन्य है। वो निरन्तर सर्व-समान-रूप से चैतन्य चलता रहेगा।

वो चैतन्य कभी फेल नहीं होता, कभी रुकता नहीं। अखण्ड-चैतन्य है। वो ही अखण्ड-आनन्द है। अखण्ड-सुख भी उसी के अंदर छुपा हुआ है। अखण्ड-वक्त भी वही है। उसके बाहर कुछ नहीं हो सकता। उसके जरिए से ही ये सृष्टि सारी सिद्ध होती है मगर उसे कोई सिद्ध नहीं कर सकता है। सृष्टि उसे सिद्ध नहीं कर सकती। मगर सृष्टि का कोई अस्तित्व नहीं।

सृष्टि के अंदर अगर हर अणु का अनुसंधान करेंगे- सृष्टि का कोई अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। हर एक जगह के अंदर, अणु अणु के अंदर चैतन्य सिद्ध होगा। इसके अलावा कुछ भी सिद्ध नहीं होगा। जैसे लोहा तुसीं कहते हो जो जरता नहीं, हीरा जिसे कहते हो वह जल्दी बदलता नहीं। बहुत सख्त होता है। मगर वह हीरा भी चैतन्यशील है। उसके अंदर भी चैतन्य की वजह से ही उसका हीरत्व है। यदि चैतन्य न हो तो उस हीरे का कोई हीरत्व नहीं सिद्ध होता।

इस प्रकार हमारे कहने का तात्पर्य है कि हर जगह के अंदर वह चैतन्य ही चैतन्य है। हम मनुष्य हैं, हमारा फर्ज़ है कि इस रहस्य को समझ लें। इस चैतन्य को समझने का प्रयास करें। चलते फिरते उठते बैठते। हम चल रहे हैं तो चलते देखो कि उसके अंदर कौन चल रहा है? यदि हम बोलते हैं तो हमारा फर्ज है कि हमें देखना चाहिए कि कौन बोल रहा है? कौन शक्ति है ये? बोलने के अंदर कौन सी क्रिया काम कर रहा? कौन सा चैतन्य काम कर रहा? इसे देखते जाओ तो यह चैतन्य सिद्ध होयेगा। और कुछ सिद्ध नहीं होयेगा। जेड़ा जेड़ा शब्द का तुम प्रयोग कर रहे हो, हर शब्द के अंदर चैतन्य होयेगा।

हमारे शरीर के अंदर भी है। बुद्धि के अंदर भी है, मन के अंदर भी है, कान के अंदर भी है, इन्द्रियों के अंदर भी है, पैर के अंदर भी है। हर जगह के अंदर मौजूद है। जिसे तुम, अग्नि, जल, वायु, आकाश कहते हो, ये जल, अग्नि, वायु, आकाश से शरीर बना है, तो ये जल, अग्नि, वायु, आकाश ही शरीर के रूप में खड़ा हुआ है। इसमें सब ओर चैतन्य ही चैतन्य भरा हुआ है। उस पर दृष्टि डालो तो मनुष्य जीवन सफल होयेगा।

इसके विपरीत यदि मनुष्य जिंदगी को सफलीभूत बनाने की कोशिश करेगा तो कभी भी संभव नहीं होगा। यह ज्ञान मनुष्य के अलावा, किसी योनि में खूबी नहीं, इस रहस्य को समझने के लिए। इस शरीर के अंदर आकर ही इस रहस्य को सकते हो। इसके अंदर स्थिरता प्राप्त कर सकते हो। स्थिरता प्राप्त करने की कोई जरूरत नहीं। स्थिर तो है ही। समझने का ही फरक है। यह समझने का ही फरक है। यदि समझ गया तो स्थिर हो। जब तक समझेगा नहीं तभी तक चक्कर में पड़े हुए हो।

अरबों जन्मों से हम भटकता रहा है। अभी भी भटकता रहेगा यदि इस रहस्य को नहीं समझेगा। इसलिए हमारे कहने का मतलब है कि हमें इस संसार में मनुष्य जन्म मिला इसे सफलीभूत बनाओ। उस चैतन्य को देखने का अभ्यास करो। जब चैतन्य को देखा ही नहीं तो कैसे कहते हो कि तुमने सत्य को देखा? जब सृष्टि के अंदर हर कोई चाहता है कि हम सत्य को देखना चाहते हैं। सत्य को कौन नहीं चाहता? तो बताओ कि सत्य को कौन नहीं चाहता? जो सृष्टि की शक्ल में है यह सत्य है। सत्य की इच्छा हमारे मन के अंदर छुपा हुआ है। ऐसा कोई मनुष्य है जो सत्य को नहीं देखना चाहता? ऐसा कोई जीव है जो सत्य को नहीं देखना चाहता? पशु पक्षी भी सत्य को चाहते हैं। सत्य को चाहते हो पर सत्य क्या है कभी देखा है ?

यदि फूल की शक्ल में उस सत्य को देखना चाहते हो, जो फूल बदल कर और चीज बन जाएगा वो क्या होगा? बो बदलकर और ही शक्ल धारण करेगें वो क्या बनेंगे? तो सत्य को कहां देख रहे हो? जो इस के अंदर चैतन्य शक्ति है वो कभी भी नहीं बदलेगा। यह फूल हजारों शक्लों में चले जाए वो चैतन्य-शक्ति वो ही रहेगा।

वो ही सत्य है। वो नहीं बदलेगा। जो बदलता है वह कभी भी सत्य नहीं होगा। जो बदलता नहीं वह सत्य होगा। यह चैतन्य फूल की शक्ल में चले जाए, अनाज बन जाए, कनक बन जाए, जो मरजी हो बन जाए। मगर चैतन्य-शक्ति वो ही होगा। उसमें कोई फर्क नहीं होगा।

तो सृष्टि के अंदर कोई सच है तो क्या? वह इसके अंदर छुपा हुआ चैतन्य-शक्ति होगा। उसके अलावा कुछ भी नहीं। वह अखण्ड होता है। वही अखण्ड-पदार्थ सच्चा है। उसके अंदर जाकर ही शान्ति मिल सकती है। तुम असत्य पदार्थ के अंदर सत्य देखते हो तो किस प्रकार शान्ति प्राप्त कर सकते हो? जो सच्चा नहीं है उसके अंदर किस तरह शांति मिल सकती है?

गहराई से अनुसंधान करके देखो वह कभी भी सच नहीं होयेगा। इससे शान्ति प्राप्त करने की कोशिश कभी भी कामयाब नहीं होगा। किसी भी सूरत में नहीं होगा। इसीलिए संसार के पदार्थो के अंदर हम भटकता रहता है मगर शान्ति, सुख किसी भी सूरत में नहीं मिलता। शांति प्राप्त करना चाहते हो तो इसके भीतर छुपे हुए सत्य को पहचानो। सत्य क्या है? जिसको तुम सत्य कहते हो वह बिल्कुल सत्य नहीं है मैने पहले ही एक उदाहरण दिया कि सृष्टि के अंदर तुम कोई भी पदार्थ सत्य नहीं सिद्ध कर सकते। क्योंकि हर पदार्थ हर सेकिंड के अंदर बदलेगा। भिन्न भिन्न शक्ल धारण करेगा। पहले हमने जिस शक्ल में उसे देखा था कालान्तर में वह और ही शक्ल बन जाता है।

तो तुम उसकी कौन सी शक्ल को सच्चा सिद्ध करोगे? इसके अंदर चैतन्य के शक्ल में देखो तो इसमें कोई भी परिवर्तन नहीं होगा। किसी भी शक्ल में। हम आदमी बन जाएं, पक्षी बनें, कीड़ा बनें, कदम्ब बनों, फूल बनें, लता बनें जो मरजी आप बन जाओ वह चैतन्य-शक्ति सबमें समान-रूप से रहेगा। वह सत्य है।

उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। जो सत्य पदार्थ है वह चैतन्य पदार्थ है। उसके अलावा कोई सत्य नहीं है। आज हम सत्य को झूठ बोली जाते हैं, झूठ को सत्य कहते हैं।

वास्तव में यह सच नहीं। सच्च तो इसके अंदर छुपा हुआ सत्य है। उस सत्य को हमने पहचाना ही नहीं! ना ही पहचानने की कोशिश किया। यही अज्ञानावस्था है।

हमारा फर्ज है कि उसे पहचानने की कोशिश करें। मनुष्य जीवन के अंदर आकर उस सत्य को पहचानने की कोशिश करो। तभी जाकर हमारा जीवन सफलीभूत होयेगा। यदि सत्य को पहचाने बिना जिंदगी छूट गया तो लाजिमी है कि बड़ा भारी घाटा हो जाएगा। इस घाटे को तुम कहीं भी जाकर पूर्ति नहीं कर सकते हो।

एक मनुष्य जीवन में आकर यदि तुमने सत्य को नहीं पहचाना तो कहीं भी जाकर नहीं पहचान सकोगे। इसी वजह से इस मनुष्य शरीर की कीमत है। वैसे यह मनुष्य शरीर किसी काम का नहीं। क्योंकि, यह मनुष्य शरीर मर जाने पर कुछ काम नहीं आएगा। मगर इसके अंदर रहकर यदि इसको पहचान लिया तो इसका बड़ा भारी कीमत होयेगा। नहीं तो पशु से भी गया गुजरा होगा। पशु मर जाने पर उसका हड्डी, चमड़ा भी काम का हो जाता है। पर मनुष्य का यह भी नहीं होता।

कहने का हमारा मतलब है कि मनुष्य के अंदर अगर कोई खूबी है तो वह यह ही है कि वह सत्य को पहचान सकता है। सत्य को पहचाने तो तभी जाकर मनुष्य बनेंगे। यदि नहीं पहचाना तो मनुष्य नहीं रहेगा। पशुवत् जीवन बीत जाएगा। पल्ले हमारे कुछ नहीं पड़ेगा। क्योंकि जिन्दगी चले जाएगा। यह एक सेकिंड ठहरेगा नहीं। इसे रोक नहीं सकते हो। जो एक सेकिंड ठहरेगा नहीं उस पर भरोसा करना कितना बड़ा भारी भूल है।

जो पदार्थ एक सेकिंड ठहरता नहीं, हम उस पर भरोसा करें तो इससे बड़ी भारी मूर्खता और क्या हो सकती है? महामूर्खता तो यही है कि हम उस पदार्थ पर भरोसा कर बैठा जो एक सेकिंड ठहरता नहीं, ना ही ठहर सकता है। तो हमारे कहने का मतलब है कि यदि जिन्दगी सफल बनाना है तो उस आत्मतत्व को पहचाने की कोशिश करो। उस चैतन्य को देखने का अभ्यास करो। हर पदार्थ के अंदर उसका अनुसंधान करने का प्रयास करो। हर पदार्थ के अंदर उसका अनुभव करने का प्रयास करो। इस तरह अनुभव करते करते एक ऐसी स्थिति आएगी जहां तुम्हारा कर्त्तव्य अभिमान बिल्कुल खत्म हो जाएगा। तुसीं कुछ नहीं किया, अभी भी कुछ नहीं कर रहे मगर तुसीं मान बैठे कि तुसीं कुछ कर रहे हो।

यह मान बैठना ही बंधन है, और कुछ बंधन नहीं है। यह मान बैठना छोड़ दो तो कल्याण हो जाएगा। तो हमारे कहने का मतलब है कि यदि मनुष्य जीवन को सफल

बनाना है, कल्याण चाहते हो तो इस रहस्य को, उस चैतन्य को पहचानने की कोशिश करो। उसे देखने का अभ्यास करो। इसी में कल्याण है। और कोई कल्याण का तरीका नहीं है।

– ॐ –